



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 12-12-2025

कानपुर-नगर(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-12-12 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

| मौसम कारक | 2025-12-13 | 2025-12-14 | 2025-12-15 | 2025-12-16 | 2025-12-17 |
|--------------------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| वर्षा (मिमी) | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 |
| अधिकतम तापमान(से.) | 26.0 | 26.0 | 27.0 | 28.0 | 27.0 |
| न्यूनतम तापमान(से.) | 11.0 | 11.0 | 12.0 | 13.0 | 12.0 |
| अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%) | 83 | 90 | 93 | 85 | 80 |
| न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%) | 46 | 50 | 51 | 48 | 44 |
| हवा की गति (किमी प्रति घंटा) | 5 | 2 | 4 | 5 | 10 |
| पवन दिशा (डिग्री) | 326 | 39 | 37 | 304 | 283 |
| क्लाउड कवर (ओक्टा) | 0 | 2 | 1 | 0 | 0 |
| चेतावनी | कोई चेतावनी नहीं | कोई चेतावनी नहीं | कोई चेतावनी नहीं | कोई चेतावनी नहीं | कोई चेतावनी नहीं |

पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, दूसरे और तीसरे दिन हल्के बादल छाए रहेंगे और शेष दिनों में आसमान साफ रहेगा, बारिश की कोई संभावना नहीं है। वायुमंडल की ऊपरी सतह पर हल्का कोहरा छाने की संभावना है और सुबह व रात में ठंड रहेगी। अधिकतम तापमान 26.0-28.0 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा, जो सामान्य से 1-2 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है, और न्यूनतम तापमान 11.0-13.0 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा, जो सामान्य से 1-2 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता का अधिकतम और न्यूनतम स्तर 80-93% और 44-51% के बीच रहेगा। हवा की दिशा उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व है और हवा की गति 2.0-10.0 किमी/घंटा के बीच रहेगी, जो सामान्य से 3-4 किमी/घंटा अधिक रहने की उम्मीद है।

मौसम चेतावनियाँ (अगले दिन के 08:30 IST तक मान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार सुबह और रात के समय ठंड की चेतावनी है।

मौसम चेतावनीयों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एग्रोमेट सलाह:

किसानों को सूचित किया जाता है कि रबी की फसलों एवं सब्जियों की बुवाई के लिए मौसम अनुकूल है रबी के मौसम में बोई जाने वाली फसले जैसे - गेहूँ व चना आदि की बुवाई उचित नमी पर शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें।

सामान्य सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे विलम्ब से बोई जाने वाली गेहूं एवं चना की बुवाई तथा खेत में खड़ी फसलों और सब्जियों की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें। रबी के मौसम में बोई जाने वाली फसलों की बुवाई बीजोपचार करने के उपरान्त ही करें। बदलते मौसम को देखते हुए किसानों को सूचित किया जाता है कि वे रात्रि के समय पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें।

लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे विलम्ब से बोई जाने वाली गेहूं एवं चना की बुवाई तथा खेत में खड़ी फसलों और सब्जियों की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

| फ़सल | फ़सल विशिष्ट सलाह |
|----------|---|
| गेहूँ | समय से बोई गई गेहूँ की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20-25 दिन बाद तथा ऊसर भूमि में बुवाई के 28-30 दिन बाद (ताजमहल अवस्था) पर हल्की सिंचाई अवश्य करें। गेहूँ की फसल में यदि सकरी व चौड़ी पत्ती वाले, दोनों प्रकार के खरपतवार दिखाई दें तो इसके नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फुरान 75% डब्लू पी ३३ ग्राम/हेक्टेयर या मैट्रिब्यूजिन 70 %डब्लू पी 250 ग्राम / हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। मौसम के दृष्टिगत सिंचित दशा में विलम्ब से बोई जाने वाली गेहूँ की संस्तुति प्रजाति मालवीय -234, यू.पी.-2338, के.-7903, के.-1902, के.-9533, एन.डी.-2643, एच.पी.-1744, एन.डब्ल्यू.-1014, यू.पी.-2425 ,डी.बी.डब्ल्यू.-14, पी.बी.डब्ल्यू.-524 , एन.डब्ल्यू.-510,एन.डब्ल्यू.-1076 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई का कार्य उचित नमी पर करें। |
| सरसों | सरसों की फसल की बुवाई के 15-20 के अन्दर निराई - गुड़ाई करने के साथ ही पौध से पौध की आपसी दूरी 10 - 15 सेंटीमीटर कर लें। समय से बोई गई सरसों की फसल में नत्रजन की शेष बची हुई मात्रा की टॉपड्रेसिंग पहली सिंचाई (बुवाई के 30 - 35 दिन के बाद) उपयुक्त नमी पर करें। सरसों की फसल में आरा मक्खी और बालदार सुण्डी कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 % एस जी 200 ग्राम /हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। |
| फील्ड पी | मटर की फसल में निराई - गुड़ाई का कार्य बुवाई के 20-25 दिन बाद तथा पहली सिंचाई बुवाई के 35-40 दिन बाद करें। |
| फील्ड पी | समय से बोई गई चने की फसल यदि 15-20 सेंटीमीटर की हो गई हो तो फसल की खुटाई करें। चने की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपाइरीफोस 50% ईसी + साइपरमेथ्रिन 5% ईसी 2.0 लीटर/ हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। चना की फसल में निराई - गुड़ाई का कार्य बुवाई से 30-35 दिन के बाद करें। चना की देर से बोई जाने वाली संस्तुति प्रजातियाँ-पूसा-372,उदय,पन्त जी.-186 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए छोटे दानों का बीज 75-80 किलोग्राम व बड़े दाने की प्रजाति के लिए 90-100 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से बुवाई करें। |

बागवानी विशिष्ट सलाह:

| बागवानी | बागवानी विशिष्ट सलाह |
|---------|--|
| आलू | वातावरण में नमी बढ़ने/बादल छाये रहने और तापक्रम गिरने से आलू की फसल में झुलसा रोग का प्रकोप तेजी से फैलता है, अतः इसके रोकथाम हेतु बुवाई के २५-३० दिन बाद मैकोजेब २.० ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आलू की फसल में पहली सिचाई बुवाई के ८-१० दिन के बाद शेष सिचाई १२ - १५ दिन के अन्तराल पर करें। आलू की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ईसी २.५ लीटर/ हेक्टेयर की दर से ५००-६०० लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। |
| प्याज | समय से बोई गई सब्जियों की आवश्यकतानुसार निराई व सिचाई का कार्य करें। टमाटर की फसल में पछेती झुलसा और बैक्टीरियल बिल्ट रोग का प्रकोप दिखाई देने पर १० लीटर पानी में ३० ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड और १ ग्राम स्ट्रेप्टोसाइलिन का मिश्रण मिलाकर छिड़काव करें। सब्जियों की फसलों में फल छेदक / पत्ती छेदक कीट का प्रकोप दिखाई दे रहे हो तो इसके नियंत्रण हेतु नीम आयल की १.५ मिली०/लीटर पानी में घोल बनाकर ३-४ छिड़काव ८-१० दिन के अंतराल पर करें। प्याज की संस्तुति प्रजातियाँ- कल्याणपुर लाल गोल, पूसा रतनार, एग्रीफॉउण्ड लाइट रेड , एक्स केलीवर, बरगण्डी, के पी, ओरिएन्ट , रोजी आदि में से किसी एक प्रजाति की नर्सरी डालें। |
| पपीता | पपीते के पौध की रोपाई का कार्य करें । केले/पपीते के बागों की गुड़ाई-करके तने के चारों तरफ २५-३० सेंटीमीटर ऊंची मिटटी चढ़ा दे स्टैंडिंग करें। आम में पत्ती कटाने वाले कीट की रोकथाम हेतु २% कार्बरिल १.५ % धूल का बुरकाव करें। आम में शूट गाल मेकर एवं टैन्ट कैटरपिलर (जाला कीट) से प्रभावित शाखाओं की छँटाई कर उन्हें नष्ट कर दें तथा नियंत्रण हेतु लैम्बडासाइहलोथ्रिन १.५-२.० मिली०/ली० पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आम में यदि शाखाओं में डाइबैक रोग/गोंद निकलने की समस्या हो तो पौधों की जड़ों के पास २००-४०० ग्रा. कॉपर सल्फेट प्रति वृक्ष की दर से प्रयोग करें तथा थायोफिनट मिथाइल १ मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोलकर पर्णों पर छिड़काव करें। केले में ५०-६० ग्रा. यूरिया तथा १००-१२५ ग्रा. म्यूरेंट ऑफ पोटैश प्रति पौध की दर से प्रयोग करें तथा १० दिनों के अन्तराल पर सिचाई करें। |

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

| पशुपालन | पशुपालन विशिष्ट सलाह |
|---------|--|
| भैंस | मौसम में परिवर्तन की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने पशुओं को रात के समय खुले में न बांधें तथा रात में खिड़कियों व दरवाजों पर जूट के बोरों के पर्दे लगाएं तथा दिन में धूप में पर्दे हटा दें। पशुओं को खुरपका-मुंहपका रोग से बचाव के लिए टीका लगवाएं। गाभिन भैंसों/गाय को ढलान वाली जगह पर न बांधें। गाभिन भैंसों/गाय को पौष्टिक चारा व दाना खिलाएं तथा नवजात बच्चे को तीन दिन तक मिश्री अवश्य खिलाएं। राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं में लम्पी त्वचा रोग का टीकाकरण पशुपालन विभाग द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है। अतः पशुपालक इसका लाभ उठावें। किलनी/जू के संक्रमण से बचाव हेतु पशुबाड़ों में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जू के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय। प्रजनन संबंधी समस्त रोगों के निराकरण हेतु पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि हरा चारा, भूसा, पशु आहार के अतिरिक्त खनिज लवण अवश्य खिलायें। कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-१९६२ पर सम्पर्क कर योजना का लाभ ले सकते हैं। |

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

| मुर्गी पालन | मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह |
|-------------|--|
| मुर्गी | किसानों को सलाह दी जाती है कि मुर्गियों के रहने के स्थान पर प्रति दिन सफाई करें। मुर्गियों को स्वच्छ पानी तथा सन्तुलित आहार की व्यवस्था करें। मुर्गियों / चूजों को ठण्ड से बचाने हेतु पर्याप्त गर्मी की व्यवस्था करें। मुर्गियों / चूजों को पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था करें। कृमिनाशक दवा पिलायें। रानीखेत बीमारी से बचाव के लिए टीकाकरण कराये। |

मौसम चेतावनियों के संभावित प्रभाव (सामान्य):

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार सुबह और रात के समय ठंड की चेतावनी है।

प्रभाव आधारित सलाह (सामान्य):

किसानों को सूचित किया जाता है कि रबी की फसलों एवं सब्जियों की बुवाई के लिए मौसम अनुकूल है रबी के मौसम में बोई जाने वाली फसले जैसे - गेहूँ व चना आदि की बुवाई उचित नमी पर शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें।

Farmers are advised to download Unified Mausam and "Meghdoot" android application on mobile for Weather forecast and weather based Agromet Advisories and "Damini" android application for forecast of Thunderstorm and lightening.

Mausam MobileApp link: <https://play.google.com/store/apps/details/>

Meghdoot MobileApp link: https://play.google.com/store/apps/details

Damini MobileApp link : https://play.google.com/store/apps/details